15-5-67 ओम शान्ति [95]

अनुभव सुनाने वाले भी कई प्रकार के है। कोई को पुरा निश्चय है। कोई को सैसी निश्चय होता कोई
को तो सैसी से भी कम है। भल सन्मुख बैठ है तो भी नथबत्तर ही समझते है। भगवान पढ़ाते है
तो भी पुरा निश्चय नही है। स्कूल मे टीचर कैसे क्या कि इनको निश्चय नही है? लेकिन यहाँ बाबा कहते
है कि बहुत है जिनको निश्चय नही है। आधा घण्टा के बाद यही भूल जाते है कि बेहद का बाप
टीचर सतगुरु हमको पढ़ाने वाला है। पुरा निश्चय नही है। नही तो वो नशा क्यो नही चढ़ा रहना चाहि
गीता मे है कि भगवानोवाच्य मै तुमको राजयोग सिखाता हूँ। सिर्फ कृष्ण का नाम डाल दिया है
जिसकारण ही 100% गीता झूठी हो गई है। वो है कृष्ण भगवानोवाच्य। यह है शिवभगवानोवाच्य।
एक ही बार की पढाई से सदगति को पाते है। यह पुआईन्ट भी सिर्फ बुधी मे बैठ जावे कि हमको
ऊँच ते ऊँच भगवान पढ़ाते है तो भी कितना नशा चढा रेह। कृष्ण को ऊँच नही कहेंगे। तुम बच्चों
को बाबा ने अच्छी तरह से समझाया है कि ऊँच ते ऊँच शिव बाबा है। शिव के ही मन्दिर जहाँ
तहाँ है। भक्त लोग शिव की पुजा करते है। कृष्ण को भगवान नही कहा जा सकता। भगवान एक ही है।
वो ही राजयोग सिखाते है। जिनको यह निश्चय है उनको अन्दर मे अपार खुशी रहेगी। यह निश्चय
हटना नही चाहिये। शिव के मन्दिर मे जाकर समझा सकते हो कि जिनकी पुजा करते हो वो हमको पढा
रहे है। यही तो ज्ञान सागर पतित पावन है। 5000 वर्ष पहले भी इसने पढ़ाया था। बाप ने ब्रह्मा
दवारा रचा है तो जरूर ब्र,कु,कु भाई-बहन हो गये। तुम्हारी स्टुडेण्ट लाईफ है ना। जब तक विनाश हो
पिछाडी तक पढ़ना है। हम है ब्र-कु-कु। यह है युक्ति की देह अभिमान छूट जावे। विकार की दृष्टी
जा नही सकती। हम सब आत्माये भाई-2 है। वो हम सबका बाप है। नाम भी है अमर नाथ।
मृत्यु लोक से अमरलोक मे ले जाने वाला। बाप कहते है कि तुम कही भी जाकर सर्विस कर सकते
हो। मन्दिर तो जहाँ तहाँ होते ही है। बोलो कि हम दर्शन करने आये है। फिर बैठ समझाओ कि तुम
मालूम पड़ता है कि बाप ज्ञान का सागर है। पतित पावन है। तो जरूर पतित से पावन बनाने लिये
पढ़ाते होगें। कृष्ण नही पढ़ाते है। शिव बाबा पढ़ाते है राजयोग सिखाते है। तो जरूर उनको शरीर
चाहिये। तो कहते है कि ब्रहमा दवारा रचना रचते है। ब्र,कु,कु को ही पढ़ाते है। भगवान स्वर्ग की
रचना रचते है। इस पुरुषोतम संगम युग पर आकर पढ़ाते है। अगर यह भी निश्चय हो जावे तो भी
खुशी रहे। गायन है ना अतिइन्द्रिय सुख गोप-गोपियो से पूछो। परन्तु वो सच्ची पहचान बहुत थोड़ो मे है
सामने भी आते है अनुभव भी सुनाते है हार जाते है तो कब पत्र भी नही लिखते है। फिर बाबा
समझते है कि मर गया होगा। सचमुच मर भी जाते है। अहो:- माया बाप कहते है कि तुम कितनी
दुस्तर हो। हमारे बच्चों को मार डालती हो। कितने मर जाते है। सेन्टर पर ही नही आते है। कोई
बात से रूठ पड़ते है। एक दुसरे से नही बनती है तो आना ही छोड़ देते है। तो आना ही मर गया
तो बाप को लिखो कि हम बाप के बने थे। अभी मरता हूँ। बाबा भी लिख सकते है कि तुम
बाप के बने थे अब मर गये हो। ऐसे बहुत है। यहाँ आते ही हो बेहद के बाप के पास। फिर मा
कितना मार डालती है। इसलिये बाबा कहते है कि ऐसे मच्छरो की तरह मरो नही। तुम बच्चो को तो
खुशी होनी चाहिये। सारी दुनियाँ जिनको कुम्भ याद करती है वो हमको पढा रहे है। यह पद प्राप्त
कराते है। आज पढ़ते है तो कल मर पड़ते है। तो बाबा कहेगें ना कि यह मर पडे है। मच्छर रात
ढेर के ढेर निकलते है सुबह मे देखो तो मरे पडे होते है। बाप उनसे भी भेट करते है कि आज बेहद
के बाप का बनते है फिर कल मर पड़ते है। ऐसे तो नही होना चाहिये ना। बाप कहते है कि
कमबख्त ते कमबख्त देखना हो तो यहाँ देखो। जो बाप से पढ़ कर फिर माया हाथ छुड़ा लेती है
कमबख्त के कमबख्त ही बन जाते है। अच्छा सुकब्ज बाप का बने रहने वाले बच्चो को नमस्ते। ओम